मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 9

सितंबर 2014

nbt.india

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 2
उर्दू सलाहकार समिति की बैठक 2
मैथिली सलाहकार समिति की बैठक 2
कारगिल पुस्तक प्रदर्शनी 3
लेह पुस्तक प्रदर्शनी 3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय 4
आओ पुस्तक समीक्षा करें 5
पटना में पुस्तक प्रोन्नयन केंद का उद्घाटन 5
पुस्तक परिचय 6
विनम्र श्रद्धांजलि 7
मिथिलेश्वर को श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको सम्मान 8
रा.पु. न्यास की पुस्तक को सम्मान 8
आगामी पुस्तक मेले 8

नवीनतम प्रकाशन

छत्तीसगढ़

शिवअनुराग पटैरया

पृ. 256 ` 240

ISBN 978-81-237-7199-1

तिरुनेलवेली पुस्तक मेला

जिला प्रशासन, तिरुनेलवेली के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 18 से 27 जुलाई, 2014 तक बीओसी ग्राउंड, पल्लमकोट्टई में 'तिरुनेलवेली पुस्तक मेला' का आयोजन किया गया।

मेले का उद्घाटन माननीय मंत्री हिंदू धार्मिक धर्मार्थ विन्यास, तमिलनाडु सरकार, श्री पी. चेंदूर पांडियन द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री पांडियन ने कहा, "पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को साहित्य, विज्ञान एवं तकनीक, इतिहास, भूगोल व अन्य विषयों को भी पढ़ना चाहिए। यह उन्हें अपने जीवन के लक्ष्यों को हासिल करने में सहायक सिद्ध होगा।" उन्होंने पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालयों के महत्व पर भी चर्चा की और यह कहा कि एनबीटी जैसे संगठनों को भी इसी उद्देश्य पर कार्य करना चाहिए।

उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता कर रहे जिलाधीश, डॉ. करुणाकरन ने कहा, "तिरुनेलवेली जैसे शहरों में पुस्तक मेले आयोजित करके विद्यार्थियों तथा आम लोगों के बीच पठन-प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना होगा। हम देश-भर में पुस्तक मेलों का आयोजन करने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के प्रयास की सराहना करते हैं। इस अवसर पर वाणिज्य कर विभाग के संयुक्त आयुक्त, श्री पी. देवेंद्र बूपथी ने उपस्थित अतिथि एवं आगंतुकों का स्वागत किया तथा जन-संपर्क अधिकारी, तिरुनेलवेली जिला प्रशासन, श्री मरिअप्पन ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

इससे पूर्व न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने पुस्तक प्रोन्नयन तथा पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से न्यास द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने विशेष रूप से दृष्टिहीनों के विद्यालय, पल्लमकोट्टइ द्वारा मेले में ब्रेल पुस्तकों का एक स्टॉल लगाने के प्रयास की सराहना की। मेले में दृष्टि-अक्षम विद्यार्थी भी आए व उन्होंने पहली बार पुस्तक मेले से ब्रेल पुस्तकें खरीदने पर खुशी व्यक्त की।

मेले में 150 से अधिक प्रकाशकों ने विभिन्न विषयों एवं विधाओं की हजारों पुस्तकों का प्रदर्शन किया। लगभग 2 लाख पुस्तक-प्रेमी मेला देखने आए। मेले में प्रतिदिन अनेक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन भी किया गया जिनमें प्रख्यात कलाकारों, कवियों, लेखकों, वक्ताओं तथा फिल्मी हस्तियों ने भाग लिया व पाठकों एवं पुस्तक-प्रेमियों के साथ बातचीत की।

पुस्तक मेले ऐसे शहरों, छोटे जिलों तथा पिछड़े क्षेत्रों में अधिक सफल साबित होते हैं जहाँ लोगों को आसानी से पुस्तकें खरीदने के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं। अनेक वर्षों से न्यास का यह प्रयास रहा है कि ऐसे दूरस्थ क्षेत्रों में पुस्तक मेले आयोजित कर पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाई जाएँ।

तिरुनेलवेली पुस्तक मेले का समन्वय न्यास (एनबीटी) में तमिल संपादक, श्री मथन राज तथा उत्पादन अधिकारी, श्री जी. रंगाराजन द्वारा किया गया।

पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के सभागार में 4 से 30 अगस्त, 2014 तक 19वाँ सर्टिफिकेट पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रकाशन विभाग की अतिरिक्त महानिदेशक सुश्री इरा जोशी ने न्यास द्वारा आयोजित इस पाठ्यक्रम को लोकप्रिय बताते हुए कहा, ''पिछले चार दशकों से प्रकाशन उद्योग में तेज़ी-से होते विकास को देखते हुए हमें इस उद्योग में प्रशिक्षित पेशेवरों को लाने के लिए ऐसे ही अन्य पाठ्यक्रमों की भी आवश्यकता है।'' सुश्री जोशी के अनुसार वर्तमान समय में भारतीय प्रकाशन उद्योग 11,000 करोड़ रुपये का है तथा इससे भी आगे प्रगति करता जा रहा है।

प्रकाशन उद्योग के बदलते स्वरूप पर सुश्री जोशी का यह मत था कि प्रौद्योगिकी ने पी बुक्स, ई बुक्स तथा ए बुक्स के बीच की बेड़ियों को समाप्त कर दिया है। अतः अब हमारे प्रकाशन उद्योग को जागृत होकर इस क्षेत्र में आए परिवर्तनों के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रकाशन एक ऐसा पेशा है जिसमें मौलिक नैतिकता एवं सदाचार का समावेश होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रकाशन जैसे महत्वपूर्ण काम के मूल्य को पहचानने का परामर्श दिया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात प्रकाशन पेशेवर, श्रीधर बालन ने कहा, ''यद्यपि भारतीय मुद्रण एवं प्रकाशन का इतिहास विस्तृत है, परंतु फिर भी हमारे पास भारतीय मुद्रण एवं प्रकाशन के इतिहास को समर्पित कोई संग्रहालय नहीं है।'' प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रकाशन उद्योग परंपरा एवं सृजनात्मकता से संचालित होता है। प्रकाशकों को बदलते समय के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए अभिनव विचारों को अपनाना होगा।

इस पाठ्यक्रम में 30 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रकाशन परिदृश्य के अतिरिक्त संपादन, उत्पादन, डिजाइन, विक्रय एवं विपणन आदि विषय भी शामिल किये गए।

भविष्य में न्यास द्वारा देश के अन्य शहरों में भी ऐसे ही पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है।

विद्यार्थियों को प्रकाशन का व्यावहारिक ज्ञान करवाने के लिए उन्हें सेज पब्लिकेशंस, मथुरा रोड तथा गोपसन प्रेस, नोएडा भी ले जाया गया। प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विशेषज्ञों में श्रीधर बालन, डॉ. एम.ए. सिकंदर, प्रणव कुमार सिंह, मुकुल सहगल, वी.के. कार्तिका, मनीषा चौधरी, श्री बी.के. मैंदीरत्ता, डॉ. सुरेश चंद, शर्मीला अब्राहम, मालिनी सूद, अर्पिता दास, जोसफ मथाई, सफीना सेगुन, तरुण दवे, बिन्नी कुरियन, मानस रंजन महापात्र, डी. सरकार, मनीष पाहूजा, एस.के. घई, आर.के. मित्तल, सुकुमार दास, अतिया ज़ैदी, आरती डैविड, लिपिका भूषण, मानसी सुब्रमण्यम आदि शामिल थे।

रा.पु. न्यास में सहायक निदेशक, श्री कुमार समरेश द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय तथा उत्पादन अधिकारी, श्री नरेन्द्र कुमार द्वारा सहयोग दिया गया।

उर्दू सलाहकार समिति की बैठक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के दिल्ली स्थित मुख्यालय में 27 अगस्त, 2014 को उर्दू भाषा सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर भी उपस्थित थे। उपस्थित सदस्यों के नाम हैं : श्री रतन सिंह, प्रो. शिरीन मूसवी, प्रो. एजाज अली अरशद, प्रो. इर्तेजा करीम, श्री चंद्रभान खयाल, श्रीमती जीलानी बानो एवं प्रो. ख्वाजा मो. एकरामुद्दीन। न्यास की ओर से उर्दू भाषा संपादक डॉ. शम्स इकबाल भी बैठक में उपस्थित थे। बैठक में मूल उर्दू भाषा में पुस्तकें तैयार करने के नए प्रस्तावों पर विचार किया गया।

मैथिली सलाहकार समिति की बैठक

पटना में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के सद्यःउद्घाटित केंद्र, पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र, में 5 सितंबर, 2014 को (केंद्र के उद्घाटन के तुंरत बाद) नवगठित मैथिली भाषा सलाहकार समिति की पहली बैठक का आयोजन किया गया। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर की अध्यक्षता में संपन्न इस बैठक में समिति के सभी छह सदस्य उपस्थित थे। ये थे : श्री गंगेश गुंजन, प्रो. भीमनाथ झा, श्रीमती उषाकिरण खान, डॉ. उमाकांत झा, श्री रामलोचन ठाकुर एवं श्री विभूति आनंद। न्यास की ओर से मैथिली भाषा प्रभारी, न्यास में हिंदी संपादक श्री दीपक कुमार गुप्ता, बिहार राज्य के लिए पुस्तक प्रोन्नयन नोडल अधिकारी श्री कुमार विक्रम एवं पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में न्यास-प्रभारी डॉ. कमाल अहमद भी उपस्थित थे। बैठक में मैथिली भाषा में कुछ नई पुस्तकों के प्रकाशन तथा कुछ महत्वपूर्ण कृतियों के अनुवाद के प्रस्ताव पर विचार किया गया।

कारगिल पुस्तक प्रदर्शनी

5 से 10 अगस्त, 2014 तक लद्दाख ऑटोनॉमस हिल डेवलपमेंट काउंसिल (एलएएचडीसी), जिला प्रशासन, जिला युवा एवं खेल विभाग, कारगिल के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा कारगिल (जम्मू-कश्मीर) के इनडोर स्टेडियम में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन एलएएचडीसी के कार्यकारी अध्यक्ष, अधिवक्ता मोहम्मद आमिर द्वारा किया गया। इस अवसर पर मोहम्मद आमिर ने कारगिल में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित करने व पाठकों को उचित कीमतों पर पुस्तकें उपलब्ध कराने के रा.पु. न्यास के प्रयास की सराहना की। उन्होंने पुस्तकों के महत्व को समझाते हुए कहा कि पुस्तकों ने समाज को महान विचारक तथा विद्वान दिए हैं जिनका योगदान प्रशंसनीय है। अतः कारगिल में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का अधिक-से-अधिक लाभ उठाएँ। इस पुस्तक प्रदर्शनी में उर्दू, अँग्रेजी, हिंदी तथा कश्मीरी भाषा की 1000 से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं तथा सभी आयु-वर्ग के पुस्तक-प्रेमियों को पुस्तकों की खरीद पर 10 प्रतिशत की छूट प्रदान की गई।

इस अवसर पर कारगिल के प्रमुख विद्यालयों के प्रधानाचार्य, पुस्तकालयाध्यक्ष तथा विभिन्न विद्यालयों से आए अनेक विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

कारगिल पुस्तक प्रदर्शनी का समन्वय, रा.पु. न्यास में उपनिदेशक (उ.क्षे.का.), मो. इमरानुल हक द्वारा किया गया।

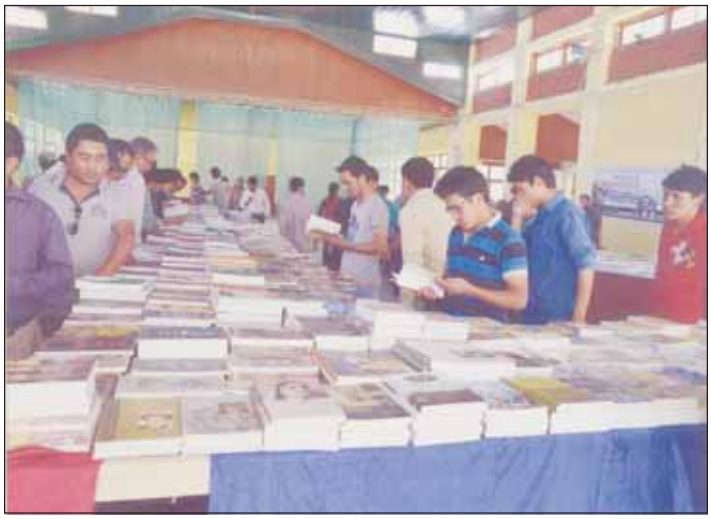

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

लेह पुस्तक प्रदर्शनी

लद्दाख ऑटोनॉमस हिल डेवलपमेंट काउंसिल, लेह (एलएएचडीसी) व जिला प्रशासन, लेह के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 2 से 8 अगस्त, 2014 तक ऑडिटोरियम हॉल, पोलो ग्राउंड, लेह (जम्मू-कश्मीर) में 'लेह पुस्तक प्रदर्शनी' आयोजित की गई।

प्रदर्शनी का उद्घाटन मोरावियन मिशन विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य जी ने कहा, "एक उत्सुक पाठक होने के नाते मैं यह मानता हूँ कि एक पुस्तक-प्रेमी कभी भी स्वयं को अकेला नहीं पाएगा।" लद्दाख के जीवन परिदृश्य को देखते हुए उन्होंने बताया कि हमारे पास विशेषकर सर्दियों में पढ़ने का समय पर्याप्त होता है। बौद्धिक अभाव को समाप्त करने तथा पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए पैदल दूरी पर पठन-सत्र होने चाहिए जहाँ उचित कीमतों पर पुस्तकें भी उपलब्ध हों। एक विद्वान व्यक्ति का समाज में महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि एक प्रबुद्ध व शिक्षित व्यक्ति का प्रभाव अपनी तीन पीढ़ियों तक होता है और उन्होंने यह आशा जताई कि ऐसा ही लद्दाख का भी भविष्य होगा।

स्वागत भाषण में रा.पु. न्यास के उपनिदेशक (उ.क्षे.का.), मो. इमरानुल हक ने वहाँ उपस्थित सभी अतिथिगणों तथा पाठकों को बताया कि लद्दाख में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित करने का उद्देश्य लद्दाखी समाज के बीच पुस्तक पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना है। उन्होंने बताया कि यह लेह में न्यास द्वारा आयोजित दूसरी पुस्तक प्रदर्शनी है, इससे पूर्व वर्ष 2012 में प्रदर्शनी आयोजित की गई थी।

पुस्तक प्रदर्शनी में हिंदी, अँग्रेजी तथा उर्दू भाषाओं की लगभग 1500 पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया जिनमें इतिहास, आत्म-जीवनचरित, भूगोल, विज्ञान, संस्कृति, कृषि, सृजनात्मकता, लोक साहित्य, धर्म व सभी आयु-वर्ग के बच्चों के लिए चित्रात्मक पुस्तकें शामिल थीं।

लेह पुस्तक प्रदर्शनी का समन्वय रा.पु. न्यास के उपनिदेशक, मो. इमरानुल हक द्वारा किया गया।

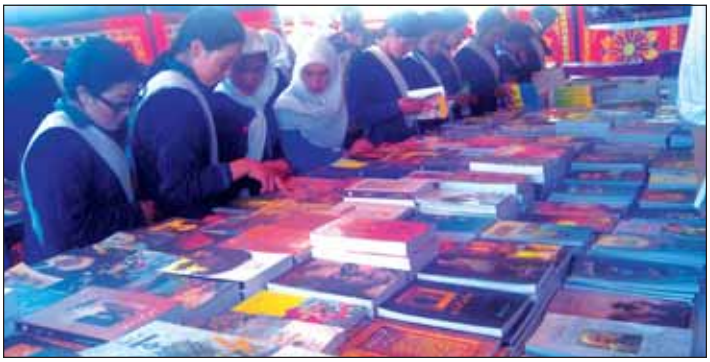

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

छत्तीसगढ़

शिवअनुराग पटैरया पृ. 256 ` 240

एक नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश से अलग होकर भारत का 26वाँ राज्य बने छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है। यहाँ के घने वन, जंगली जानवर, बहुत-सी जनजातियाँ व उनके शिल्प व बोलियाँ, देश ही नहीं दुनिया में अनूठे हैं। इस क्षेत्र का उल्लेख त्रेता युग में दंडकारण्य के रूप में और पुराणों में दक्षिण कोसल के रूप में मिलता है। वन और खनिज संपदा से संपन्न यह राज्य नक्सली गतिविधियों के कारण चर्चित है। यह पुस्तक इस राज्य के अतीत, वर्तमान, राजनीति, संस्कृति व साहित्य, शिल्प और सृजन; सभी पक्षों का प्रामाणिक दस्तावेज है। ISBN 978-81-237-7199-1

परवाज़-ए-ग़ज़ल

कैलाश गुरु 'स्वामी' पृ. 146 ` 140

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने देवनागरी लिपि में उर्दू ग़ज़ल के विभिन्न तत्वों पर सूक्ष्म दृष्टि से व्यापक चर्चा की है। पुस्तक में छंद, व्याकरण और शेर, ग़ज़ल कहने के पैरामीटर पर विस्तृत अध्ययन किया गया है। उर्दू के अरूज़ छंद पर अर्थात ग़ज़ल के पिंगल-शास्त्र पर केंद्रित और हिंदी भाषा में लिखित, यह पुस्तक साहित्यप्रेमियों के लिए बेजोड़ है।

ISBN 978-81-237-7191-5

गोपाल सिंह 'नेपाली' के गीतिकाव्य में संगीत-तत्व

राकेश रंजन पृ. 122 ` 115

गीतों की परंपरा वैदिक काल से वर्तमान काल तक अजस्र, अबाध्य तथा अनवरत रूप से चली आ रही है। कविवर 'नेपाली' अपने समय (1929-1963) के बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न कवि थे। 'नेपाली' के गीतों में लयात्मकता, ध्वन्यात्मकता, रसात्मकता, भाव-प्रवणता, भावात्मकता तथा छंदात्मकता आदि सर्वत्र अपनी अनुभूतियों के साथ उपस्थित है। प्रस्तुत पुस्तक में 'नेपाली' के काव्यगत सांगीतिक तत्वों, संगीत-उत्पादक कारकों, प्रयुक्त राग-रागिनियों, स्वर-लय-तालों का बड़े मनोयोग, लगन, निष्ठा, तन्मयता तथा समग्रता के साथ चित्रण किया गया है। ISBN 978-81-237-7190-8

नज़ीर अकबराबादी

संक., संपा. एवं अनु. : इब्ने कँवल पृ. 176 ` 140

अपने काल में नाक़द्री के सबब नज़ीर अकबराबादी की जिंदगी के बारे में बहुत अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। नज़ीर का तअल्लुक़ जिस काल से था वह उर्दू शायरी का सुनहरा दौर कहा जाता है।

नज़ीर की सन्ने-पैदाइश के बारे में तक़रीबन सभी मुहक़्क़ेकीन ने इस बात पर इत्तेफ़ाक किया है कि वह अहदे मुहम्मद शाही में नादिर शाह के हमले से चार साल पहले यानी 1735 ई. को देहली में पैदा हुए। यह बात भी कही जाती है कि नज़ीर की पैदाइश आगरा में हुई। देहली नज़ीर का ददिहाल था और आगरा ननिहाल। लेकिन नज़ीर देहली से नहीं आगरा से मुहब्बत करते थे।

शायरी में नज़ीर एक खास तर्ज़ को पैदा करने वाले भी हैं और ख़त्म करने वाले भी। नज़ीर वड्र्सवर्थ की तरह फ़ितरत के शायर थे। नज़ीर अकबराबादी ने अपनी लंबी जिंदगी में जिस क़दर तमाम विषयों पर नज़्में लिखी हैं उसकी दूसरी मिसाल शायद ही कोई हो।

ISBN 978-81-237-7168-7

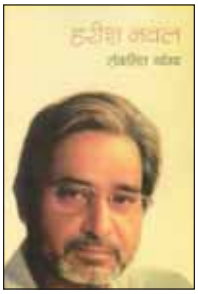

हरीश नवल : संकलित व्यंग्य

पृ. 150 ` 150

पंजाब में जन्मे, पुरानी दिल्ली के प्रतिष्ठित परिवार में शायर पं. त्रिलोकनाथ 'आज़म जलालाबादी' के पौत्र और अँग्रेजी पत्रकार श्री हरिकृष्ण नवल के पुत्र हरीश नवल की वैसे तो 1962 से रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं, परंतु 1965 में 'नोंक झोंक' में प्रकाशित रचना *कमेंट्रीदास* को वे अपनी पहली व्यंग्य रचना मानते हैं। 'बागपत के खरबूजे' पर युवा ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला। इसके साथ ही अन्य चर्चित पुस्तकों में, *दिल्ली चढ़ी पहाड़, पीली छत पर काला निशान, दीनानाथ के हाथ, वाया पेरिस आया गाँधीवादी* प्रमुख रहीं।

ISBN 978-81-237-7163-2

गैस गुब्बारा

बी. मदन मोहन; अनु. : अतुल वर्धन पृ. 16 ` 40

प्रस्तुत पुस्तक तीन रोचक कविताओं का संग्रह है– 'गैस गुब्बारा', 'चिड़िया' और 'चाँद बोला'। कविताओं में भारत की प्राकृतिक सुंदरता व धार्मिक विभिन्नता के दर्शन करवाये गए हैं। साथ ही, चंदा मामा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई का महत्व बताने व असहाय बच्चों की सहायता करने की सीख भी दी गई है। कविताओं की भाषा बच्चों के लिए बोधगम्य तथा मन को लुभा लेने वाली है।

ISBN 978-81-237-7201-1

परिणाम और सोने की टिकिया

सीतेश आलोक; अनु. : पार्थ सेनगुप्ता पृ. 20 ` 40

पुस्तक में लेखक ने *परिणाम* तथा *सोने की टिकिया* नामक दो कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। 'परिणाम' कहानी में अंधविश्वास को दूर करने पर बल देने के साथ ही सचाई, मेहनत व ईमानदारी के साथ कार्य करने की प्रेरणा भी दी गई है। 'सोने की टिकिया' कहानी के माध्यम से बच्चों को लालच न करने तथा एक अच्छा इनसान बनने की शिक्षा दी गई है। कहानियों की भाषा सरल तथा सुबोध है व चित्र आकर्षक हैं। ISBN 978-81-237-7186-1

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के

किताब क्लब का सदस्य बनें

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पाठकों की भाषा, संस्कृति, आयु-वर्ग और रुचियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। इस प्रकार विज्ञान, कला, पर्यावरण तथा कई अन्य विषयों के सूचना-प्रधान साहित्य से लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों के कथा साहित्य और बच्चों के लिए सुंदर ढंग से चित्रित साहित्य तक व्यापक विषयों पर न्यास की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें 32 भारतीय भाषाओं और अँग्रेजी में, उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं। न्यास का लगातार यह प्रयास रहा है कि वह अपने प्राधिकृत पुस्तक विक्रेताओं के एक बेहतर नेटवर्क के अलावा देश के प्रत्येक जिले में किताब क्लब सदस्यों के नामांकन के द्वारा अपनी किताबें पहुँचाए।

न्यास की पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए न्यास 1994 से ही एक किताब क्लब योजना का संचालन कर रहा है। आप भी इस किताब क्लब का सदस्य बनें। विस्तृत विवरण एवं प्रपत्र हेतु कृपया हमारा वेबसाइट देखें : www.nbtindia.gov.in

आओ पुस्तक समीक्षा करें

23 से 31 अगस्त, 2014 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 20वाँ दिल्ली पुस्तक मेला आयोजित हुआ जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा हॉल सं. 10 में पुस्तक स्टॉल लगाया गया व सभी पुस्तक-प्रेमियों को रा.पु. न्यास की पुस्तकों पर 10 प्रतिशत की छूट दी गई। पुस्तक मेले के दौरान भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन तथा भारतीय प्रकाशक संघ के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा 'आओ पुस्तक समीक्षा करें' विषय पर एक कार्यशाला तथा साथ ही, बच्चों का चित्रकार के साथ संवादात्मक सत्र भी आयोजित किया गया।

'पुस्तक समीक्षा' विषय पर आधारित कार्यशाला का पहला सत्र इग्नू की एसोसिएट प्रोफेसर, प्रो. नंदिनी साहू द्वारा तथा 'चित्रकारी' पर आधारित दूसरा सत्र प्रख्यात चित्रकार व चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के कला निदेशक, श्री सुबीर राय द्वारा संचालित किया गया।

'एक पुस्तक की समीक्षा कैसी की जाए' इस पर चर्चा करते हुए प्रो. साहू ने बताया, "एक समीक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वही पाठक को बताता है कि पुस्तक किस बारे में है।" दूसरे सत्र में प्रख्यात चित्रकार, श्री सुबीर राय ने बच्चों को पुस्तक का आवरण डिज़ाइन करने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमारे देश के अनेक युवा कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उन्होंने अपने चित्रकार होने के अनुभव बच्चों के साथ साझा किए व अच्छी चित्रकारी करने के सुझाव भी दिए।

इस कार्यशाला में दिल्ली के 150 से अधिक विद्यालयों से आए विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह से भाग लिया तथा वक्ताओं के साथ संवाद स्थापित किया।

कार्यशाला में भाग ले रहे 20 विद्यार्थियों को अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कार के रूप में रा.पु. न्यास की पुस्तकें तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किये गए। सभी प्रतिभागियों को रा.पु. न्यास की पुस्तकें उपहारस्वरूप भेंट की गईं।

कार्यक्रम का समन्वय रा.पु. न्यास, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र द्वारा किया गया।

पटना में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन

देश-भर में पुस्तकोन्नयन के प्रति अपनी वचनबद्धता के दृष्टिगत, रा.पु. न्यास ने पुस्तक संस्कृति से समृद्ध राज्य बिहार की राजधानी पटना में भी पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की स्थापना की है जिसका उद्घाटन राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी ने किया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद सुश्री कहकशाँ परवीन तथा बिहार विधान परिषद सदस्य प्रो. रामवचन राय की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। मुख्यमंत्री महोदय के मुख्य संबोधन के साथ-साथ सुश्री परवीन एवं प्रो. राय के भी संबोधन हुए। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने न्यास की गतिविधियों एवं कार्यों की व्यापक जानकारी दी। बिहार में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की स्थापना के उद्देश्यों पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। इस अवसर पर न्यास से प्रकाशित कुछ पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

मुख्यमंत्री महोदय ने अपने संबोधन में इस बात पर खुशी व्यक्त की कि शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर पटना में एनबीटी द्वारा पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की शुरुआत की गई है।

कार्यक्रम की शुरुआत माननीय मुख्यमंत्री द्वारा दीप प्रज्वलन से की गई। इसके उपरांत डीएवी स्कूल, पटना की कुछ छात्राओं ने स्वागत-गान की प्रस्तुति की।

विदित हो कि पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में न्यास से प्रकाशित पुस्तकों का एक विक्रय केंद्र भी स्थापित किया गया है। यहाँ साहित्यिक कार्यक्रमों/गतिविधियों के आयोजन की भी सुविधा प्रदान की जाएगी। पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में न्यास की ओर से कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कमाल अहमद हैं।

(कार्यक्रम की विस्तृत रपट अगले अंक में प्रस्तुत की जाएगी। **—संपा.**)

पुस्तक परिचय

ताकि सनद रहे (कहानी-संग्रह)
अब्दुल बिस्मिल्लाह; पृ. 400 ` 700
राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
हम अपने परिवेश के उन यथार्थों को देखकर भी अकसर अनदेखा कर देते हैं जो हमारे लिए प्रायः गैर-जरूरी और अरुचिकर होते हैं। लेकिन एक संवेदनशील रचनाकार विशेषतौर पर दृश्य के बीच अदृश्य की तलाश करता है और उसे ही अपनी रचना का केंद्रबिंदु भी बना देता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के चार कहानी संग्रहों के इस संकलन की कहानियों को पढ़कर हमें प्रायः ऐसा ही दिखाई देता है।

फैसले अब हमारे हैं (स्त्री-विमर्श)
रंजना श्रीवास्तव; पृ. 249 ` 460
कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
स्त्री-विमर्श पुरुषों को गाली देना भर नहीं है बल्कि स्त्री को भी अपने गिरेबाँ में झाँकने का एक उपक्रम है। इस पुस्तक में लेखिका जहाँ पुरुष सत्ता से सीधे-सीधे प्रश्न पूछती है वहीं स्त्री को उसकी बेवकूफियों के लिए सचेत भी करती हैं। एक विचारोत्तेजक पुस्तक।

प्रतिनिधि कहानियाँ; *ओमप्रकाश वाल्मीकि;* पृ. 108 ` 175
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
किसी रचनाकार की अगर समस्त रचनाओं को पढ़ने का समय आपके पास नहीं है तो कम-से-कम उनकी कुछेक प्रतिनिधि रचनाओं (यहाँ कहानी) को पढ़कर उसके रचनाकार/कथाकार व्यक्तित्व को तो समझा ही जा सकता है। दस कहानियों के इस संग्रह के माध्यम से भी वाल्मीकि जी के कथाकार को समझने का प्रयास है यहाँ।

यस सर (कहानी-संग्रह)
अजय नावरिया; पृ. 192 ` 300
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
बारह कहानियों का संग्रह। आम जिंदगी से जुड़ी कहानियाँ जिनमें पाठक अपना अक्स भी बखूबी देख सकता है। कथ्य-कथन, शैली सरल, सहज, आभिजात्य के आतंक से प्रायः मुक्त। स्त्री और दलित प्रायः इनकी कहानियों के केंद्र में होते हैं, लेकिन विषय का विस्तार दूर तक है।

बिहार पर मत हँसो (व्यंग्य-संग्रह)
गौतम सान्याल; पृ. 152 ` 250
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित व्यंग्य विभिन्न कालावधि में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे हैं। साहित्य, हिंदी जगत, सिद्धांत, स्त्री-विमर्श, शिक्षा आदि विषय इस संग्रह की कथावस्तु हैं। इस व्यंग्य में हँसी कम और पीड़ा अधिक है जो हमें हँसाते कम और सोचने को मजबूर अधिक करते हैं।

शिक्षा की गतिशीलता : अवरोध, नवाचार एवं संभावनाएँ
जगमोहन सिंह राजपूत; पृ. 296 ` 520.00
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
उलझनों के भँवर में–शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था–घट रही है साख, शिक्षा में बदलाव के आधार, शिक्षा का अधिकार कैसे मिलेगा आदि शिक्षा से जुड़े अनेक मसलों पर स्वतंत्र लेख है यहाँ। 50 से अधिक लेख। शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिए एक जरूरी पुस्तक।

बाजार में गुड़िया (कविता-संग्रह)
सीतेश आलोक; पृ. 124 ` 190
परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-110092
अपने समय, समाज और समसामयिक संसार का सच उजागर करना किसी भी समय-सजग कवि का लक्ष्य होता है। यहाँ भी कवि ने यही किया है और ऐसा करने में समर्थ भी हुआ है। 'मात्र आक्रोश और उद्वेग/नहीं होती कविता/कविता नहीं होती/प्रहार एवं विद्वेष भी...' कवि का कहना है।

अन्तर्यात्रा (कविता-संग्रह)
सेतु भास्कर; पृ. 80 ` 100
नवारम्भ, 63, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पटना-20
जन्म से ही सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित होने की वजह से चलने-उठने में असमर्थ बाईस साल के युवक सेतु ने अपने सीमित दायरे में ही 'कंप्यूटर बाबा' की कृपा से असीमित ब्रह्मांड रच डाला है। सेतु की कविताओं के दायरे में प्रकृति, बच्चे, समय-समाज के अलावा मानवीय विकृति आदि सब शामिल हुए हैं।

कविताएँ फेसबुक से; *संपा. : लालित्य ललित;* पृ. 144 ` 200
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर-246701 (उ.प्र.)
नित-नित उन्नत हो रही प्रौद्योगिकी के इस समय में फेसबुक की महत्ता स्वयंसिद्ध है। फेसबुक एक ऐसी कोरी दीवार बन गया है जिस पर हर कोई कुछ-न-कुछ चस्पाँ कर देने को बेकरार है। कवि भी क्यों पीछे रहें! उन्होंने भी अपनी कविताएँ 'पेस्ट' कर दीं फेसबुक पर। लालित्य जी ने बड़े ही श्रम एवं कौशल से कुछ चुनिंदा कविताएँ वहाँ से निकाली और उन्हें पुस्तक रूप प्रदान किया है।

चाचाजी नमस्ते
अशोक वर्मा; पृ. 128 ` 250
नवशिला प्रकाशन, ए-75, श्रीराम कॉलोनी, निलोठी एक्स., नाँगलोई, नई दिल्ली-110041
'स्व' जब 'पर' में परिणत हो जाता है तो साहित्य का महत्तर उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। ग़ज़लकार अशोक वर्मा का यह उपन्यास बेशक अपने परिवार को केंद्र में रखकर लिखा गया है (जिसमें उनके पिताजी मुख्य पात्र हैं) किंतु इसके बहाने 19वीं सदी के अंत से लेकर 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक का देश-समाज और समय भी हमारे सामने जीवंत हो उठता है।

चारु वसंता (देसी काव्य)
नाडोज हं. प. नागराजय्य; अनु : एच.वी. रामचंद्र राव
पृ. 340 ` 250
कहं प्रकाशन, 1079, 18वाँ 'ए' मेईन, 5वाँ ब्लॉक, राजाजीनगर, बेंगलुरु-560010
जनमुखी और समाजमुखी आख्यान। मानव के स्वभाव की परतों को खोलते हुए, मत और धर्मातीत होकर महोन्नत मानव मूल्यों को खोजने का प्रयास है यहाँ। चारु के अमर प्रेम के इस आख्यान को जन-भाषा के मुहावरों में सजाया गया है।

भैरों कभी नहीं मरा; *डॉ. गंगाराम राजी;* पृ. 228 ` 450
नमन प्रकाशन, 4231/1 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
घटना-प्रधान इस उपन्यास में स्त्री जाति के प्रति लेखक की संवेदनशीलता को सीधे-सीधे लक्षित किया जा सकता है। एक स्त्री तमाम वैचारिक नारों और विमर्शों के बावजूद आज भी अनेकानेक पीड़ाओं और त्रासदियों को भोग रही है। लेखक की संवेदनशीलता ने पुरुष पाठकों के अहं को थोड़ा पिघला दिया है।

विनम्र श्रद्धांजलि

अगस्त 2014 में न्यास (एनबीटी) को अपने दो पूर्व अध्यक्षों के देहावसान के शोक का दंश झेलना पड़ा। सभी न्यासकर्मी इनकी आत्मा की शांति व मुक्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं तथा विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **–संपादक**

यू.आर. अनंतमूर्ति

कन्नड़ भाषा के प्रख्यात लेखक यू.आर. अनंतमूर्ति का 82 साल की उम्र में बेंगलुरु में 22 अगस्त, 2014 को देहावसान हो गया। वे 1 फरवरी, 1992 से 8 सितंबर, 1993 तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष रहे।

उडुपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति साहित्य जगत में यू.आर. अनंतमूर्ति के अपने संक्षिप्त नाम से ही अधिक जाने जाते थे। भारतीय साहित्य के प्रतिष्ठित सम्मान ज्ञानपीठ सम्मान (1994) से सम्मानित लेखक पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। अंततः दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

अनंतमूर्ति उन विरले साहित्यकारों में शामिल थे जिनके लिए समाज सेवा और राजनीतिक सजगता सिर्फ नारा या विमर्श तक ही सीमित न रहकर जीवन का ध्येय था। एक विचारधारा के साथ जीने वाले इस जुझारू लेखक का पूरा जीवन लेखन और कर्म के बीच शून्य दूरी के एक उत्कट उदाहरण के रूप में रहा। वे मानते थे कि एक सजग रचनाकार को सामाजिक मुद्दे पर केवल लिखना ही नहीं चाहिए वरन उसे सामाजिक जिम्मेवारी भी निभानी चाहिए।

यू.आर. अनंतमूर्ति का जन्म 21 दिसंबर, 1932 को शिमोगा जिले में तीर्थहल्ली तालुके के गाँव मेलिज में हुआ था। संस्कृत स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर मैसूर विश्वविद्यालय से उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की। वे कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप के तहत इंग्लैंड भी गए। उन्होंने 1966 में बर्मिंघम विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट प्राप्त की। 1970 में मैसूर विश्वविद्यालय में अँग्रेजी प्राध्यापक के रूप में अध्यापन आरंभ कर अस्सी के दशक में कोट्टयम में महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय के उप-कुलपति बने। सृजनात्मक लेखन के अलावा अपनी सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता के कारण संगोष्ठियों आदि में उन्होंने देश-विदेश की भारतीय प्रतिनिधि के तौर पर अनेक यात्राएँ कीं।

कन्नड़ साहित्य में अनंतमूर्ति का प्रभूत अवदान रहा। उन्होंने कहानी, कविता, उपन्यास, निबंध आदि अनेक विधाओं में लिखा। *इंदेंदु मग कथे, मौनी, प्रश्ने, अकाश मत्तू, मुरू दसकडा कथेगलु* उनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं। *भव, संस्कार, भारतीपुर अवस्थ, दिव्या* उनके चर्चित उपन्यास हैं। *15 पदग्यालु, मिथुना, अज्जाना हेगला सुक्कुगलु* प्रसिद्ध कविता-संग्रह हैं। इसके अलावा समीक्षा ग्रंथ, आलोचना ग्रंथ और निबंध की अनेक पुस्तकें भी हैं। उनकी कुछ कृतियों पर फिल्में भी बनी हैं। उनकी रचनाओं का लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। अंतरराष्ट्रीय भाषाओं, यथा अँग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, हंगारी आदि में भी उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ है।

पद्मभूषण से भी सम्मानित लेखक के एक उपन्यास 'भारतीपुर' पर न्यास की 'आदान-प्रदान' (अंतर्भारतीय) पुस्तकमाला के अंतर्गत अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद का कार्य चल रहा है। उन्हें वर्ष 2013 के मान बुकर अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के लिए भी नामित किया गया था।

उनके निधन को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'कन्नड़ साहित्य की बड़ी क्षति' बताया। कवि कुँवर नारायण ने उन्हें 'एक सजग चिंतक साहित्यकार' कहा। कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी ने उन्हें 'अखिल भारतीय उपस्थिति का रचनाकार' कहा। केदारनाथ सिंह उन्हें 'हमारे वक्त के सबसे अहम कथाकारों में एक' निरूपित करते हैं। साहित्य अकादेमी-अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उनके निधन को 'भारतीय साहित्य की अपूरणीय क्षति' बताया। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने उन्हें 'चिंतन का सागर' कहा।

एक अध्यक्ष के रूप में यू.आर. अनंतमूर्ति के मार्गदर्शन में न्यास में कई नई पुस्तकमालाओं का आरंभ किया गया।

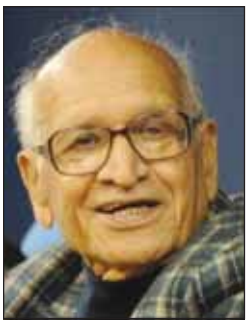

बिपिन चंद्र

देश के प्रख्यात इतिहासकार प्रो. बिपिन चंद्र का 30 अगस्त, 2014 को गुड़गाँव में उनके घर पर निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे और काफी समय से बीमार चल रहे थे। 9 जुलाई, 2004 से 11 सितंबर, 2012 तक वे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष रहे।

प्रो. चंद्र का जन्म हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में 1928 में हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा फार्मन क्रिश्चियन कॉलेज; स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरिका और दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय में ही कई सालों तक लेक्चरर और रीडर पद पर कार्यरत रहने के बाद उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य किया। 1985 में वे इंडियन हिस्ट्री काँग्रेस के अध्यक्ष भी रहे तथा 1993 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य बने।

प्रो. बिपिन चंद्र आधुनिक एवं समकालीन भारतीय इतिहास लेखन के एक मुख्य स्तंभ थे। भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन के भी एक सबल स्तंभ और अग्रणी रहे प्रो. चंद्र ने इतिहास की अनेक पुस्तकों का प्रणयन किया जिनमें मुख्य इस प्रकार हैं : *द राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकॉनोमिक नेशनलिज्म, इंडिया आफ्टर इंडिपेंडेंस, इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, इन द नेम ऑफ डेमोक्रेसी : द जेपी मूवमेंट एंड इमरजेंसी, नेशनलिज्म एंड कोलोनियलिज्म इन मॉडर्न इंडिया* और *द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया : फ्रॉम मार्क्स टू गाँधी*। इतिहास पर लिखी उनकी अनेक किताबें स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाई जाती रही हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से इतिहास पर प्रकाशित उनकी किताबें छात्रों एवं इतिहास के अध्येताओं के बीच बेहद लोकप्रिय रहीं। प्रो. चंद्र की दो अन्य इतिहासकारों के साथ संपादित एवं न्यास से प्रकाशित पुस्तक 'स्वतंत्रता संग्राम' बेहद चर्चित एवं लोकप्रिय है।

इतिहास के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को देखते हुए भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। गत वर्ष दिसंबर में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बिहार ने उन्हें 'इतिहास रत्न' के खिताब से भी सम्मानित किया था।

प्रो. चंद्र के निधन पर राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी ने अपने शोक संदेश में कहा, "प्रो. चंद्र आधुनिक भारत के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक थे।" प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी प्रो. चंद्र के निधन पर अपनी संवेदना प्रकट की है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह एवं कई अन्य प्रमुख हस्तियों ने भी प्रो. चंद्र के निधन पर शोक व्यक्त किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में प्रो. बिपिन चंद्र का लंबा कार्यकाल अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियों से भरा रहा। उनके कार्यकाल में न्यास में 'लोकोपयोगी सामाजिक विज्ञान', 'भारतीय साहित्य पुस्तकमाला', 'आत्म-जीवनचरित', 'भारतीय डायस्पोरा अध्ययन' सरीखी नई पुस्तकमालाओं की शुरुआत हुई जिनके अंतर्गत अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ` 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/9/2014

मिथिलेश्वर को श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको सम्मान

देश के अग्रणी कथाकार मिथिलेश्वर को वर्ष 2014 का श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान देने की घोषणा की गई है। विदित हो कि देश की अग्रणी सहकारी संस्था इफको यह पुरस्कार हर वर्ष किसी ऐसे रचनाकार को देती है जिसके लेखन में ग्रामीण और कृषि जीवन की समस्याओं, आकांक्षाओं और संघर्षों को मुखरित किया गया हो। मिथिलेश्वर की रचनाओं में ग्रामीण जीवन का अंकन बखूबी हुआ है। मिथिलेश्वर के छह उपन्यास और 11 कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं। न्यास से भी उनकी एक पुस्तक प्रकाशित है जिसका नाम है–मिथिलेश्वर : संकलित कहानियाँ।

रा.पु. न्यास की पुस्तक को सम्मान

29 जुलाई, 2014 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 86वें स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित व डॉ. वीरेंद्र भारती द्वारा लिखित मूल हिंदी पुस्तक **कागज और पर्यावरण** को परिषद द्वारा डॉ. राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह पुरस्कार माननीय कृषि मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह द्वारा लेखक को प्रदान किया गया। यह पुरस्कार आइसीएआर द्वारा प्रतिवर्ष कृषि तथा संबंधित विज्ञान पर आधारित हिंदी में लिखी सर्वश्रेष्ठ तकनीक प्रधान पुस्तक को दिया जाता है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

त्रिवेंद्रम पुस्तक मेला, केरल	– 4 से 12 अक्तूबर, 2014
भोपाल पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	– अक्तूबर-नवंबर, 2014
पुणे पुस्तक मेला, महाराष्ट्र	– नवंबर, 2014
रायपुर पुस्तक मेला, छत्तीसगढ़	– 1 से 7 नवंबर, 2014
जम्मू पुस्तक मेला, जम्मू-कश्मीर	– नवंबर, 2014
इंदौर पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	– 6 से 14 दिसंबर, 2014
कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	– 18 से 26 दिसंबर, 2014
जोधपुर पुस्तक मेला, राजस्थान	– दिसंबर, 2014
देहरादून पुस्तक मेला, उत्तराखंड	– दिसंबर, 2014

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :
उप-निदेशक (प्रदर्शनी)
दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070